

अप्राप्य सांख्यिकी (Non-parametric statistics) अप्राप्य सांख्यिकी के दो विभागों में विभक्त किया जाता है। के लिए कोई खास खती नहीं रखी है। इसी कारण अप्राप्य सांख्यिकी के वितरण के लिए कोई खती नहीं रखी, इसलिए इसे वितरण-मुक्त सांख्यिकी भी कहा जाता है। यह वितरण-मुक्त सांख्यिकी कहा जाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इसकी कोई भी पूर्वकल्पना नहीं है। यहाँ तो यह है कि प्राप्य सांख्यिकी में ठोपने परमात्मक आंकड़ों के लिए कुछ पूर्वकल्पना करनी है। जैसे प्रमाण स्वतंत्र एवं निरपेक्ष है, पर में जिसका अध्ययन किया जा रहा है। निरंतरता (continuity) है तथा आंकड़ों को समूहों में बाँटा जा सकता है। प्रारंभिक एवं अन्त विधि आसंग गुणांक, प्रमीक्षण आदि - अप्राप्य सांख्यिकी के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं। अप्राप्य सांख्यिकी की उपस्थिति परमात्मक तथा इसके विशेषताओं के लिए विवरण नीचे रूपरेखा दी है।

Teacher's Signature :

(i) वितरण - मुक्त - (आवश्यकताओं के लिए)। - अप्राथमिक शिक्षण की संवाय वाली विभिन्न विधियों में से एक है कि जहाँ शिक्षण में प्रयोग वितरण का कोई आवश्यक नहीं है। अतः प्रथम शिक्षण की आवश्यकता प्रायः वहाँ किती जाती है। जहाँ प्रयोग वितरण का अभाव होता है।

(ii) निरपेक्ष अवलोकन। - प्रथम शिक्षण की एक मात्र ही अभिव्यक्ति है कि अवलोकन अपेक्षाहीन है दूसरे शब्दों में अवलोकन पर मोक्षक की प्रवृत्तियों सिद्धांत, आदि पक्षों की प्रभाव नहीं पड़ता।

(iii) निरन्तरता - मुक्त - (आवश्यकताओं के लिए)। - प्रथम शिक्षण के लिए आंकड़ों में प्रथम में निरन्तरता की विभिन्नता की कोई आवश्यक नहीं है। प्रथम आवश्यकता ही परिस्थित में लाना किती जाती है। जहाँ प्रथम ही प्रथम निरन्तरता की अभाव होता है।

(iv) छोटी प्रतिदम्ब (Small Sample)। - अप्राथमिक शिक्षण की आवश्यकता वहाँ किती जाती है। जहाँ प्रतिदम्ब छोटी होती है। छोटी प्रतिदम्ब में प्रयोग वितरण का अभाव पता जाता है।

(v) कम स्तर प्रदर्शन (Low level of performance)। -

Teacher's Signature :

इस सांख्यिकी की एक विशेषता यह भी है कि इसका उपयोग प्रायः कम सूचक सूचक पर किया जाता है। कुछ विशेष परिस्थितियों में इसका उपयोग नामिक सूचक (Nominal Scale) पर भी किया जाता है। अर्थात् यह सांख्यिकी के लक्षण - की उपस्थिति

- (i) व्यापक क्षेत्र (Wide scope) : यह सांख्यिकी के उपयोग के लिए कोई कठोर अविद्यमान नहीं है। अतः इसका उपयोग विभिन्न प्रतिक्रिया पर करना संभव है। अतः व्यापकता प्राथमिक सांख्यिकी में नहीं है।
- (ii) समान तथा अलग-अलग वर्ग - असांख्यिक सांख्यिकी में समान वर्ग लगता है।
- (iii) सरलता तथा सहजता : सांख्यिकी का यह प्रकार प्राथमिक सांख्यिकी की तुलना में अधिक सरल तथा सहज होता है।
- (iv) दोष प्रतिक्रिया - यह प्रकार की सांख्यिकी के लिए लक्षण यह है। (NE 10 or Less)
- (v) कोटि के रूप में आंकड़ों का प्रयोग नहीं। प्रत्येक आंकड़ा समान होता है। कि उच्च केवल कोटियों के रूप में ही लक्षण प्रयोग की जा सकता है। अतः असांख्यिक सांख्यिकी का उपयोग आसानी से होता है।

Dr. Premod Kumar Sengupta
 sub. Psychology - V.S.F. College, Poojagarh
 Meethubeni (Bihar) Date - 05/04/2021
 Teacher's Signature :